OM 20 A FINAL-MAHARASHTRA_Page 1 and 2 14/01/2015 08:02 Page 5

शिव अवतरण

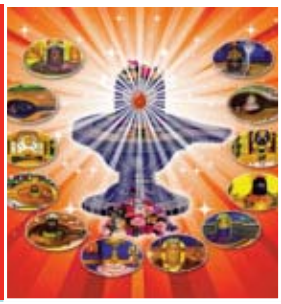

ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

विश्व रचयिता परमात्मा का उदय भारत में.....!

सभी अपने जीवन को देखो कि जब आपके जीवन में कभी कोई संकट आता है तो उस समय आप संसार के अपने मसीहों को याद करते हैं। जब इन सांसारिक मसीहों द्वारा ये मान लिया जाता है कि हम नहीं कुछ कर सकते तो आप बड़ी चात्रक नज़रों से ऊपर की तरफ देखते हैं और कहते हैं कि हे भगवान आप ही मुझे इस संकट से निकाल सकते हैं। कई बार निकाला है! वही निराकार परमात्मा विश्व रचयिता हम सभी का मात-पिता स्वयं धरा पर अवतरित होकर हमें बड़े स्नेह और प्यार से उन संकटों से मुक्ति दिला रहे हैं। भगवान शब्द वैसे भी ऐश्वर्यवान का वाचक है, तभी तो उसे लोग भजते हैं। वह दु:ख भंजक, संकट मोचन परमात्मा हमें फिर से अपनी याद दिला रहे हैं। उसके लिए दुनिया में कहावत है कि तेरी सत्ता के बिना, हे प्रभु मंगल मूल। पत्ता तक हिलता नहीं, खिले न कोई फूल।

मनुष्य बाज़ार में जाता है तो देखता है कि किसी जगह पर यह साइन बोर्ड लगा है– 'श्याम लाल आर्किटेक्ट'। दूसरी दुकान पर लिखा है– 'मनमोहन डेन्टिस्ट' (दाँतों का डॉक्टर)। तीसरी दुकान पर लिखा है– 'इलेक्ट्रीशियन'। तो वह इन-इन व्यवसाय वालों को याद रखता है ताकि अगर दाँतों में कभी दर्द हो तो वह उस डॉक्टर के पास जाकर इलाज करायेगा। जब मकान का नक्शा बनवाना होगा तो उस आर्किटेक्ट के पास जाकर नक्शा बनवा आयेगा और अगर बिजली-सम्बन्धी कोई कार्य कराना होगा तो उस इलेक्ट्रीशियन के पास पहुँचेगा। परन्तु जैसे उन-उन व्यक्तियों के वह-वह व्यावसायिक नाम हैं, वैसे परमात्मा के तो ऐसे अनेक कर्त्तव्यवाचक नाम हैं जिनसे सिद्ध होता है कि वो दु:खहर्ता, सुखकर्ता, पापों से मुक्त करने वाले, मनुष्य का कल्याण करने वाले, अमृत पिलाने और काल, कंटक तथा संकट दूर करने वाले हैं। तब भला मनुष्य परमात्मा के इन नामों रूपी 'साइन बोर्ड्स'की ओर क्यों नहीं ध्यान देता? वह परमात्मा के कर्त्तव्यवाचक नामों को जानते हुए भी उनके पास क्यों नहीं पहुँच पाता? जबकि आज वह दु:खी है और सुख चाहता है तो वह परमात्मा से सुख क्यों नहीं प्राप्त करता? मनुष्य अपने काल-कंटक दूर करने और भण्डारे भरपूर करने का यह उपाय क्यों नहीं करता? यदि

हे आत्माओं अब तो पहचानो!जिसे आपने मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में ढूंढ़ा, तीर्थ यात्राएँ की फिर भी मुझसे दूर रहे। मैं वही निराकार परमपिता आप सभी आत्माओं को फिर से दु:खों से उबारने, सतयुगी भारत बनाने और आप आत्माओं को शान्ति और सुख का वर्सा देने के लिए पुन: अवतरित हो चुका हूँ। अब तो जागो, मुझे पहचानो। बहुतों ने जाना, तुम भी जानो कि मैं ही तुम्हारा आत्मिक पिता निराकार शिव हूँ।

उसे भगवान का सत्य परिचय होता तो आज रौनक ही कुछ और होती। और यही सबसे बड़ी विडम्बना है कि भगवान मानें तो किसको मानें? यदि हमने उस कल्याणकारी परमपिता का हाथ पकड़ा होता तो आज भारत की यह दशा थोड़े ही होती! स्पष्ट है कि उसे यह ज्ञान ही नहीं है कि– 'परमात्मा का परिचय प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि उसके दु:खों का अन्त हो और उसे सम्पूर्ण एवं स्थायी सुखों की प्राप्ति हो। इसके अलावा हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है। इस समय हम दो कार्य कर सकते हैं। या तो मान लें कि भगवान है या फिर नहीं है। इससे आपकी दुविधा दूर हो जायेगी, क्यों? क्योंकि हमारे मानने न मानने से परमात्मा का अस्तित्व नहीं मिट जायेगा। वो है तो है। तो आओ एक कदम उसकी तरफ बढ़ायें ...।

कौन हैं शिव? रहते कहाँ हैं?

परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर

के भी रचयिता हैं जिन्हें हम त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकिनाथ, और तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी कहते हैं। विश्व की सभी आत्माओं, चाहे वो देव-आत्मा है, महान-आत्मा है, पुण्य-आत्मा है, धर्मात्मा है के पिता परमपिता परमात्मा शिव है। वह अजन्मा है अभोक्ता है। उनका रूप निराकार ज्योतिर्बिन्दु है, वो परमधाम निवासी है। शिव का अर्थ कल्याणकारी है। परमात्मा निराकार है इसका अर्थ यह नहीं की उसका कोई आकार नही है बल्कि उसका कोई शरीर नहीं है। आकार का अर्थ स्थूल आखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है।

परमात्मा का निवास स्थान - परमधाम

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पाँच प्राकृतिक तत्वों से अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। हम अपना हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं।

कैसे दिखते हैं वो ?

सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह या लक्षण। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।अन्य प्रवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है।

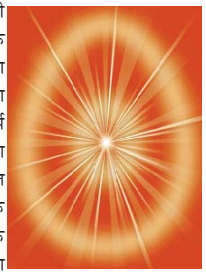

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

आज चारो तरफ एक ही लहर है कि कोई हमारे मन को तसल्ली दे, हमें प्यार करे, हमारी भावनाओं को समझे। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं और हम सभी इसका पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी नज़रों के सामने होगी क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है।

भारत देश पुन: देवभूमि व धन-धान्य से सम्पन्न बनेगा जहां सुख, शान्ति व सम्पत्ति के अखुट भंडार होंगे। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा होगी। ऐसी स्वर्णिम दुनिया का शुभ संदेश जन-जन तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है।

परमात्मा शिव की हम बच्चों प्रति यही शुभ आशाएं हैं कि हे बच्चों आपको जो कुछ मिला है वो जन-जन में बांटो और उसे बढ़ाते जाओ। हमने तो पहचाना, और लोग भी इसे पहचानें, ऐसा न हो कि कोई वंचित रह जाए, कोई उलाहना न दे। कोई यह न कहने लग जाए कि भगवान आया और आपने बताया नहीं। तो इस महाशिवरात्रि के अवसर पर चारो तरफ शिव-संदेश फैलाओ ताकि पूरे विश्व के कोने-कोने से एक ही आवाज़ आए कि हमारा परमात्मा शिव इस धरा मंच पर आ चुका है। इन्हीं शुभ आशाओं व शुभ भावनाओं के साथ आपको शिव जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ।